International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 23-06-2019; Accepted: 24-07-2019
www.hindijournal.com
Volume 5; Issue 5; September 2019; Page No. 47-49

उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र–छात्राओं में स्वप्रकटीकरण

डॉ. सपना शर्मा [1], चन्द्रावती चौहान [2]
[1] एसोशियट प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, वनस्थली विद्यापीठ), राजस्थान, भारत
[2] एम. एड़. छात्रा वनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान, भारत

सारांश
प्रस्तुत शोध–लेख में छात्र–छात्राओं को स्वप्रकटीकरण के विभिन्न आयामों को प्रस्तुत किया गया है। इस लेख में स्वप्रकटीकरण के चार आयाम भावनात्मक, शैक्षिक, व्यक्तिगत एवं आकांक्षा से सम्बन्धित है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग गया। संकलित प्रदत्तों के विशेषण हेतु प्रतिशत विश्लेषण एवं 'टी' परीक्षण का उपयोग किया गया है। अध्ययन में पाया गया कि छात्र–छात्राओं के भावनात्मक, शैक्षिक एवं व्यक्तिगत स्वप्रकटीकरण में अन्तर पाया जाता है जबकि आकांक्षा सम्बन्धी स्वप्रकटीकरण में अन्तर नहीं पाया जाता है।

मूल शब्द: भारतीय सुसंस्कृत, स्त्री संवेदना।

प्रस्तावना

उच्च माध्यमिक स्तर पर शिक्षार्थी किशोरावस्था में होते है। यह अवस्था तीव्र शारीरिक, भावनात्मक और व्यवहार सम्बन्धी परिवर्तनों का काल है। इस अवस्था में वे अपनी भावनाओं समस्याओं एवं अपनी रूचियों को सबके सामने प्रकट करने में संकोच करते है। स्वप्रकटीकरण सम्प्रेषण की प्रक्रिया है, जिसमें एक व्यक्ति अपने विषय में सूचनाओं को पूर्ण विश्वास के साथ प्रकट करता है। डब्लू. एच. रिबेनबार्क (1971), केथरिन डिनाडिया, माइक एलेन (1992) ने पाया कि लडकिया, लड़कों से अधिक स्वप्रकटीकरण करती है। किश्चीना एम. रिनावड़ी, पासकल एम. (2000) ने पाया कि किशोरावस्था में लिंग के सन्दर्भ में स्वप्रकटीकरण के तरीके में भिन्नता होती है।

डेनिस आर पपीनी, फ्रेंक एफ फरमर स्टीवन एम. क्लार्क, जिन सी. माइका (1990) ने भावनात्मक स्वप्रकटीकरण हेतु उम्र व लिंग के प्रभाव का अध्ययन किया। उपरोक्त शोध अध्ययन के आधार पर कुछ शोध प्रश्न उभरते है कि क्या छात्र एवं छात्राओं के स्वप्रकटीकरण में भिन्नता होती है? क्या छात्र–छात्राये के शैक्षिक स्व प्रकटीकरण में भिन्नता होती है? क्या छात्र–छात्राओं के व्यक्तिगत एवं भावात्मक स्वप्रकटीकरण में भिन्नता होती है? उपरोक्त प्रश्नों के समाधान प्राप्ति हेतु शोधकर्त्री ने निम्न शोध समस्या का चयन किया।

शोध समस्या कथनः ''उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र–छात्राओं में स्वप्रकटीकरण''

शोध–उद्देश्यः प्रस्तुत शोध अध्ययन के उद्देश्य निम्नांकित है।

1. उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्रों में स्वप्रकटीकरण का अध्ययन करना।
2. उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्राओं में स्वप्रकटीकरण का अध्ययन करना।

शोध परिकल्पनाः प्रस्तुत शोध अध्ययन की परिकल्पनायें निम्नलिखित है।

1. उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्रों में स्वप्रकटीकरण में भिन्नता होती है।
2. उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्राओं में स्वप्रकटीकरण में भिन्नता होती है।
3. उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र–छात्राओं के भावनात्मक स्वप्रकटीकरण में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
4. उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र–छात्राओं के शैक्षिक स्वप्रकटीकरण में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
5. उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र–छात्राओं के व्यक्तिगत स्वप्रकटीकरण में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
6. उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र–छात्राओं के आकांक्षाओं के स्वप्रकटीकरण में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

तकनीकी शब्दों की व्याख्या : प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्रयुक्त तकनीकी शब्दों का अर्थ अग्रांकित प्रस्तुत है।

1. **उच्च माध्यमिक स्तर** : प्रस्तुत शोध अध्ययन में उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी से तात्पर्य कक्षा 12 में अध्ययनरत विद्यार्थी से है।
2. **स्वप्रकटीकरण** :– स्वप्रकटीकरण एक सम्प्रेषण प्रक्रिया है, जिसके माध्यम से कोई व्यक्ति अपनी निजी एवं अंतरंग सूचनाएँ दूसरे व्यक्तियों (अभिभावक, मित्र समूह, अध्यापक एवं परिवार के अन्य सदस्य) के समक्ष प्रकट करता है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में स्वप्रकटीकरण से तात्पर्य विद्यार्थी द्वारा शैक्षिक आयाम (उपलब्धि, सफलता व असफलता), व्यक्तिगत आयाम (विचार, पसन्द नापसन्द) भावनात्मक आयाम (भावना, तनाव) तथा आकांक्षा ये जुड़ी सूचनाओं को प्रकट करने से है।

शोध विधि : प्रस्तुत शोध अध्ययन में सर्वेक्षण विधिका प्रयोग किया गया है।

जनसंख्या : प्रस्तुत शोध अध्ययन में जयपुर शहर के राजकीय एवं निजी विद्यालय में अध्ययनरत कक्षा 12 वीं के छात्र व छात्राओं को जनसंख्या के रूप में लिया गया है।

न्यादर्श : न्यादर्श के रूप में कुल 56 छात्रों एवं 59 छात्राओं का चयन किया गया है।

शोध उपकरण : शोधकर्त्री द्वारा निर्मित स्वप्रकटीकरण प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है, जिसमें 20 प्रश्न पद निर्मित किये गये

है।

प्रदत्तों के स्त्रोत : प्रस्तुत शोध अध्ययन में कक्षा 12 वीं में अध्ययनरत शिक्षार्थी प्रदत्तों के स्त्रोत है। प्रदत्तों के स्त्रोत प्राथमिक स्त्रोत है।

प्रदत्तों की प्रकृति : प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्रदत्तों की प्रकृति मात्रात्मक है।

प्रदत्तों का प्रस्तुतीकरण एवं विश्लेषण : प्रदत्तों का विश्लेषण परिकल्पनावार प्रस्तुत किया गया है।

परिकल्पना (i) उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्रों में स्वप्रकटीकरण में भिन्नता होती है।

परिकल्पना (ii) उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्राओं में स्वप्रकटीकरण में भिन्नता होती है।

तालिका 1: लिंग भेद अनुसार शिक्षार्थियों में स्वप्रकटीकरण

शिक्षार्थी	स्वप्रकटीकरण के आयाम			
	भावनात्मक	शैक्षिक	व्यक्तिगत	आकांक्षा
छात्र (56)	15%	43%	17%	25:
छात्रा (59)	24%	25%	21%	30:

ग्राफ (1) लिंग भेदानुसार शिक्षार्थियों में स्वप्रकटीकरण

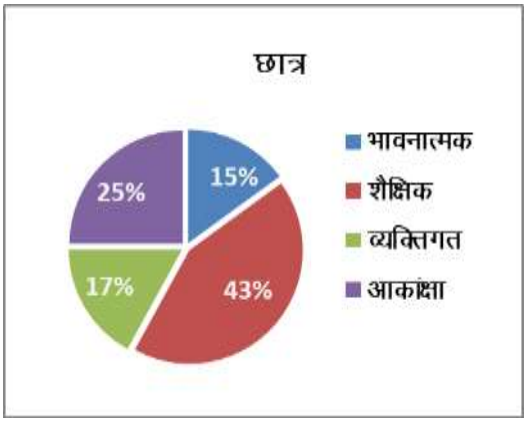

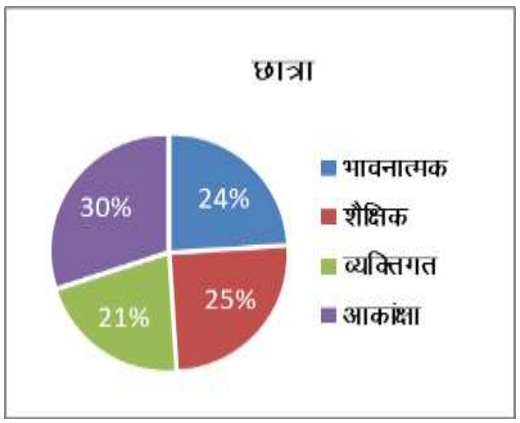

उपरोक्त तालिका व ग्राफ (1) से ज्ञात होता है कि छात्र एवं छात्राओं में स्वप्रकटीकरण के विभिन्न आयामों में भिन्नता दिखायी देती है। छात्र अपनी शैक्षिक उपलब्धि का स्वप्रकटीकरण अधिकतम (43:) करते है वहीं छात्रायें (25:) करती है। छात्रायें अपनी आकांक्षाओं का स्वप्रकटीकरण अधिकतम (30:) करती है। वहीं छात्र (25:) करते है। इस प्रकार उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि छात्र–छात्राओं के व्यक्तिगत एवं भावात्मक स्पष्टीकरण में भी अन्तर है। अतः यह स्पष्ट होता है कि छात्र–छात्राओं के स्पष्टीकरण में भिन्नता होती है। इस प्रकार परिकल्पना (1) व (2) स्वीकृत होती है।

परिकल्पना (3) उच्च मध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र–छात्राओं के भावनात्मक स्वप्रकटीकरण में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

तालिका 2: छात्र–छात्राओं में भावनात्मक स्वप्रकटीकरण

शिक्षार्थी	संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	स्वतंत्रता के अंश	'टी'मान
छात्र	56	84.52	14.28	113	1.9726
छात्रायें	59	89.38	12.10		

तालिका (2) से ज्ञात होता है कि छात्रों के भावनात्मक स्वप्रकटीकरण के प्राप्तांको का मध्यमान 84.52 तथा छात्राओं के प्राप्तोंको का मध्यमान 89.38 है। वही छात्रों के प्राप्तांकों का प्रमाणिक विचलन 14.28 व छात्राओं के प्राप्तांको का प्रमाणिक विचलन 12.10 है। प्राप्तांको का 'टी' मान 1.9726 है। जो स्वतंत्रता के अंश 113 एवं 05 विश्वास स्तर पर सार्थकता के आवश्यक मान 1.96 से अधिक है। अतः परिकल्पना (3) अस्वीकृत होती है।

परिकल्पना (4) : उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र–छात्राओं के शैक्षिक स्वप्रकटीकरण में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

तालिका 3: छात्र–छात्राओं मे शैक्षिक स्वप्रकटीकरण शिक्षार्थी संख्या मध्यमान प्रमाणिक विचलन स्वतंत्रता के अंश 'टी'मान

छात्र	56	74.41	12.10	113	2.8167
छात्रायें	59	67.41	14.28		

तालिका (3) से ज्ञात होता है, छात्रों के शैक्षिक स्वप्रकटीकरण के प्राप्तांकों का मध्यमान 74.41 व प्रमाणिक विचलन 12.10 है। तथा छात्राओं के प्राप्तांकों का मध्यमान 67.41 व प्रामाणिक विचलन 14.28 है। प्राप्तांको का 'टी' मान 2.8167 है जो स्वतंत्रता के अंश 113 एवं 05 विश्वास स्तर पर सार्थकता के आवश्यक मान 1.96 से अधिक है अतः परिकल्पना (4) अस्वीकृत होती है।

परिकल्पना (5) : उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र–छात्राओं के व्यक्तिगत स्वप्रकटीकरण में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

तालिका 4: छात्र–छात्राओं में व्यक्तिगत स्वप्रकटीकरण शिक्षार्थी संख्या मध्यमान प्रमाणिक विचलन स्वतंत्रता के अंश 'टी'मान

छात्र	56	67.45	11.14	113	2ण्3210
छात्रायें	59	72.34	5.83		

तालिका (4): से ज्ञात होता है कि छात्रों के व्यक्तिगत स्वप्रकटीकरण के प्राप्तांको का मध्ययन 67.45 तथा प्रमाणिक विचलन 11.14 है व छात्राओं के प्राप्तांकों का मध्यमान 72.34 व प्रमाणिक विचलन 5.83 है। प्राप्तांकों का 'टी' मान 2.3210 है जो स्वतंत्रता के अंश 113 व .05 विश्वास स्तर पर सार्थकता के आवश्यक मान 1.96 से अधिक है। अतः परिकल्पना (5) अस्वीकृत होती है।

परिकल्पना (6): उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र–छात्राओं के आकांक्षाओं के स्वप्रकटीकरण में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

तालिका 5: छात्र–छात्राओं में आकांक्षा का स्वप्रकटीकरण शिक्षार्थी संख्या मध्यमान प्रमाणिक विचलन स्वतंत्रता के अंश 'टी'मान

छात्र	56	73ण्46	12ण्14	113	1ण्0359
छात्रायें	59	78ण्43	9ण्73		

तालिका (5) से ज्ञात होता है कि छात्रों के आकांक्षा स्वप्रकटीकरण के प्राप्तांकों का मध्यमान 73.46 व प्रमाणिक विचलन 12.14 है। छात्राओं के प्राप्तांको का मध्यमान 78.43 व प्रमाणिक विचलन 9.73 है। प्राप्तांकों का 'टी' मान 1.0359 है। जो स्वतंत्रता के अंश 113 व .05 विश्वास स्तर पर सार्थकता के आवश्यक मान 1.96 से कम है। अतः परिकल्पना (6) स्वीकृत होती है।

निष्कर्षः– प्रस्तुत शोध अध्ययन के निष्कर्ष अग्रांकित है।

1. छात्र एवं छात्राओं में स्वप्रकटीकरण के विभिन्न आयामों में भिन्नता पायी जाती है।
2. छात्र–छात्राओं के भावनात्मक स्वप्रकटीकरण में सार्थक अन्तर पाया जाता है।
3. छात्र–छात्राओं के शैक्षिक स्वप्रकटीकरण में सार्थक अन्तर पाया जाता है।
4. छात्र–छात्राओं के व्यक्तिगत स्वप्रकटीकरण में सार्थक अन्तर पाया जाता है।
5. छात्र–छात्राओं के आकांक्षा के स्वप्रकटीकरण में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

शैक्षिक निहितार्थः (प्रस्तुत शोध पत्र शिक्षकों के लिये निम्नलिखित निहितार्थ प्रस्तुत करता है।)

- यदि शिक्षार्थी अपने संवेदनाओं को प्रकट करते है, तो अध्यापक शिक्षार्थी की समस्या से अवगत हो पाते है तथा आवश्यकतानुरुप परामर्शन कर सकते है।
- यदि शिक्षार्थी अपनी संवेदना को प्रकट करते है, तो शिक्षक शिक्षार्थी की क्षमताओं व कमियों से अवगत होकर उन्हें उत्साहवर्धन व दिशा निर्देश कर पाते है।
- शिक्षार्थी द्वारा स्वप्रकटीकरण करने से शिक्षक उनमें सकारात्मक दृष्टिकोण व उपचारात्मक कक्षा का आयोजन कर उन्हें दिशा निर्देश प्रदान कर सकते है।
- शिक्षार्थी के स्वप्रकटीकरण के पश्चात् शिक्षक को उसकी सूचनाओं की गोपनीयता बनायी रखनी चाहिये। ताकि विद्यार्थी का विश्वास सबल हो सके।
- शिक्षक शिक्षार्थी को प्रेरित भी करे कि वे अपनी भावनाओं, सफलताओं व असफलताओं को व्यक्त करें व प्रेरणा ले।

अध्ययन की परिसीमाएँः प्रस्तुत शोध अध्ययन राजस्थान राज्य बोर्ड द्वारा मान्यताप्राप्त विद्यालय के कक्षा 12 में अध्ययनरत शिक्षार्थी तक सीमित है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में स्वप्रकटीकरण के चार आयामों को ही लिया गया है। (भावनात्मक, शैक्षिक व्यक्तिगत एवं आकांक्षा)

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. हार्वे, नि. अक्ववा–आसी, जा. वोकोवसी एम. वि., रिनाल्डी, एम. किपास्कन, एम. (2000), सिवलिंग सेल्फ–डिस्क्लोजर इन अर्ली एडोलसेंस, मोरिल पामर क्वाटरली, 46(4), अक्टूबर 2000, च्च 653–671. रिट्राइब्ड फ्रोम https://stor.org/stable/23092569
2. पपीनी, आर. डे. फारमर, एफ. फ्रेम, क्लार्क एम.सी., मिका, सी. जी. वारनेट, के. जबाडां, अर्ली एडोलसेन्ट एज एण्ड जेन्डर डिफरेन्स इन पैटर्न ऑफ इमोशनल सेल्फ–डिस्क्लोजर टू पैरेन्ट एण्ड फ्रेन्ड्स एडोलसेन्स, वॉल्यूम नं. 25, ईश्यू 100, च्च 959, रिट्राइब्ड फ्रोम https://search.proquest.com
3. डिनडिया, के. , एलेन मा. (1992), सेक्स डिफरेंस इन सेल्फ–डिस्क्लोजर, ए मेटा एनालिसिस, साइकोलोजिकल बुलेटिन, वॉल्यूम नं. 112, अंक 1, पृ. 106–124. रिट्राइब्ड फ्रोम https://scholar.google.co.in